بسم اللہ الرحمن الرحیم والصلوۃ والسلام علی رسول اللہ و علی ازواجہ و الہ واصحابہ اجمعین الی یوم الدین

12
ربیع الاول
1432ھ

Research Paper 4

16
February
2011

इमामुल अंबिया ﷺ की दावत-ए-कुरआन

[وَاُوْحِیَ اِلَیَّ ھٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ .... الانعام : 19]
(अलअनाम:19)

[और वहीह किया गया है मेरी तरफ़ यह कुरआन ताकि मैं इससे तब्लीग़ करूँ तुम्हें और जिस तक भी यह पहुँच जाए]

मेरे मुसलमान भाइयों! शैतानी वसवसों के बावजूद **अपनी मौत से पहले-पहले** सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर **लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!**

اللہ ﷻ और उसके महबूब, हमारे निहायत ही शफ़ीक़ आक़ा, इमामे आज़म, इमामे कायनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, इमामु व ख़ातमुल अंबिया वल मुरसलीन, शफ़ीउल मुज़नबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की मुबारक तालीमाते **वहीह (कुरआन और उसकी तफ़्सीर यानी सहीह अहादीस)** शक से पाक, महफ़ूज़ो-सही हालत में मौजूद और हमारे समझने के लिये आसान हैं:

नोट: आम मुसलमान भाइयों को समझाने की ख़ातिर हर आयत का तर्जुमा बा मुहावरा और बिल मफ़्हूम किया गया है।

① ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○
[البقرۃ : 2]
(सुरहतुल बकरह:2)

❶ (यह कुरआन) वो (बुलंद रुत्बे वाली) किताब है कि जिस में शक (की कोई जगह) नहीं है, (यह कुरआन) परहेज़गारों के लिये हिदायत है (यानी जो वाक़ई आख़िरत की जवाबदेही से बचना चाहें।)

② لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۭ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ○
[حٰمٓ السجدۃ : 42]
(सूरह हा-मीम सजदा: 42)

❷ इस (कुरआन) के नज़्दीक बातिल नहीं आ सकता ना आगे से और ना ही पीछे से, यह (कुरआन) बड़े हकीम और ख़ूबियों वाले (اللہ ﷻ) की तरफ़ से उतरा है।

③ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ○
[الحجر : 9]
(सुरहतुल हिज्र:9)

❸ बेशक इस नसीहत (की किताब कुरआन) को हम (اللہ ﷻ) ही ने नाज़िल फ़रमाया है और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

④ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ○
[القمر : 17،22،32،40]
(सुरहतुल क़मर:17,22,32,40)

❹ और बेशक हम (اللہ ﷻ) ने इस कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया है, पस है कोई जो (इस कुरआन से) नसीहत हासिल करे?

दीन-ए-इस्लाम कुबूल करने के अलावा اللہ ﷻ की बारगाह में क़यामत के दिन निजात और कामयाबी का कोई और ज़रिया कत्अन्न नहीं:

⑤ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَھُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَھُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ○
[آل عمران : 19]
(सूरह आले इमरान:19)

❺ बेशक اللہ ﷻ के नज़्दीक (कुबुलियत वाला) दीन सिर्फ़ इस्लाम है और इस पुख़्ता इल्म (कुरआन) के आ जाने के बाद भी अहले किताब (यहूदियों और ईसाइयों) ने (इस दावत से) सिर्फ़ जिद की वजह से इख़्तिलाफ़ किया (यानी मैं उसकी क्यों मानूँ यह मेरी माने), और जो कोई اللہ ﷻ की आयत का इन्कार करे तो बेशक اللہ ﷻ जल्द हिसाब लेने वाला है।

⑥ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَھُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○
[آل عمران : 85]
(सूरह आले इमरान: 85)

❻ और जो कोई इस्लाम के अलावा किसी और दीन को इख़्तियार करेगा तो ऐसे शख़्स से (उसका वह दीन) हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में ख़सारा पाने वालों में से हो जाएगा।

⑦ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ○
[الحجر : 2]
(सुरहतुल हिज्र:2)

❼ (क़यामत के होलनाक दिन) काफ़िर लोग बहुत ही ज़्यादा (हसरत के साथ) ख़्वाहिश करेंगे कि ऐ काश! वह (दुनिया मे) मुसलमान होते।

⑧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○
[آل عمران : 102]
(सूरह आले इमरान:102)

❽ ऐ ईमान वालो! اللہ ﷻ से डरो जैसा कि डरने का हक़ है और (देखना) तुम्हें मौत ना आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो (यानी हमेशा इस्लाम पर ही क़ायम रहना)।

दीन-ए-इस्लाम اللہ ﷻ और उसके महबूब सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के अलावा कोई ज़ात मुत्तलकन हुज्जत और दलील नहीं:

⑨ يٰٓاَيُّھَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ○
[النساء : 59]
(सूरह: अन्निसा:59)

❾ ऐ ईमान वालों! اللہ ﷻ की इताअत करो और रसूल ﷺ की इताअत करो और तुम में से जो हाकिम हो। अगर तुम्हारे (हाकिम और अवाम) के दर्मियान कोई इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उस (इख़्तिलाफ़) को (फ़ैसले के लिये) اللہ ﷻ और रसूल ﷺ की तरफ़ लौटा दिया करो अगर तुम (वाक़ई) اللہ ﷻ और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हो, यह (तुम्हारा तर्जे अमल) ख़ैर वाला और अच्छे अन्जाम वाला है।

⑩ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ○
[آل عمران : 31 اور 32]
(सूरह: आले इमरान :31,32)

❿ ऐ महबूब ﷺ ! आप फर्माओं: अगर तुम اللہ ﷻ से मुहब्बत करते हो तो फिर मेरी इत्तबा करो, اللہ ﷻ तुम से मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ फ़रमा देगा और اللہ ﷻ माफ़ फ़रमाने वाला रहम फ़रमाने वाला है। आप फ़रमाओ: اللہ ﷻ की इताअत करो और रसूल ﷺ की और अगर वह मुंह फेर लें तो اللہ ﷻ काफ़िरों से मुहब्बत नहीं करता।

② दीन-ए-इस्लाम की सच्ची तालीमात, ज़ाती गुमान और बे-अस्ल व बे-बुनियाद ख़्यालात की बजाए सिर्फ़ सहीह इल्म पर क़ायम हैं।

⑪ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ○ [الانعام : 116] (सूरह: अल अनाम:116)

⓫ और (ऐ सुनने वाले!) अगर तू अहले ज़मीन की अक्सरियत की पैरवी करेगा तो वह तुझे اللهﷻ की राह से बहका देंगे, ये लोग तो ज़ाती गुमान के पीछे चलते और सिर्फ़ अन्दाजें लगाते हैं।

⑫ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـــًٔا ○ [النجم : 28] (सूरह: नज्म: 28)

⓬ और (ऐसे लोगों को) उसके (यानी तौहीद के) मुताल्लिक़ कुछ इल्म ही नहीं वह सिर्फ अपने ज़ाती गुमान की पैरवी करते हैं और हक़ (यानी इल्म) के मुक़ाबले में गुमान की कोई हैसियत ही नहीं है।

⑬ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۭ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ○.......... [الزمر : 9] (सूरह: ज़ुमर:9)

⓭ (ऐ महबूब ﷺ ! आप फ़रमाओ : (ऐ लोगो) भला क्या इल्म रखने वाले और इल्म ना रखने वाले बराबर हो सकते हैं ? बेशक नसीहत तो सिर्फ़ अक़्ल वाले ही हासिल करते हैं।

⑭ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــــُٔوْلًا ○ [بنی اسرائيل : 36] (सूरह: बनी इस्राईल: 36)

⓮ और (ऐ सुनने वाले!) किसी ऐसी चीज़ के पीछे मत लग जाओ जिसके मुताल्लिक़ तुम्हें इल्म ना हो। (यानी पहले इल्म हासिल करो), बेशक कान और आँख और अक़्ल इन सब के मुताल्लिक़ तुम से सवाल किया जाएगा।

⑮ ....اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰۗؤُا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ○ [فاطر : 28] (सूरह: फातिर:28)

⓯ बेशक اللهﷻ के बन्दों में से जो इल्म रखते हैं सिर्फ वही उस से डरते हैं। (यानी वही मारफ़त रखने वाले हैं), बेशक اللهﷻ ग़ालिब है बख़्शने वाला है।

दीन-ए-इस्लाम में तमाम उलूम की बुनियाद 2 सर चश्मों पर है: क़ुरआन और सुन्नत (जो सिर्फ़ सहिहुल अस्नाद हदीसों से माख़ूज़ हों)

⑯ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْھِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِھِمْ يَتْلُوْا عَلَيْھِمْ اٰيٰتِھٖ وَيُزَكِّيْھِمْ وَيُعَلِّمُھُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ [آل عمران : 164] (सूरह: आले इमरान:164)

⓰ बेशक اللهﷻ ने मोमिनों पर एहसान फ़रमाया है कि उन्हीं में से रसूल ﷺ को मबऊस फ़रमाया जो उन पर उसकी आयतें तिलावत करते हैं, और उन्हे पाक करते हैं और उन्हें किताब (क़ुरआन) और हिक्मत (क़ुरआन व सुन्नत) का इल्म सिखाते हैं, और यकीनन वह लोग (रसूल ﷺ के आने) से पहले खुली गुमराही में थे।

⑰ يٰٓاَيُّھَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۗءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ○ [يونس : 57] (सूरह: यूनुस: 57)

⓱ ऐ तमाम इन्सानों बेशक तुम्हारे पास आ गई है नसीहत की चीज़ (क़ुरआन) तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा है सीनों की बीमारी (शिर्क वगैरह) की और हिदायत और रहमत है मोमिनीन के लिये।

⑱ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ ھُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ .... ○ [البقرة : 185] (सुरहतुल बक़रा:185)

⓲ रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरान नाज़िल फ़रमाया गया है (जो कि) हिदायत है लोगों के लिये, और (इस क़ुरआन में) हिदायत और हक़्क़ो-बातिल में फ़र्क करने के लिये रोशन दलाइल मौजूद हैं।

⑲ ....اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ ھٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ [الاحقاف : 4] (सुरहतुल अहक़ाफ़:4)

⓳ ऐ महबूब ﷺ ! जब काफ़िर लोग बहस करें तो उनसे यूँ फरमाओ:)लाओ मेरे पास अपनी कोई किताब इस (क़ुराआन)से पहले या फिर इल्म के (नक़ल शुदा) आसार, अगर तुम सच्चे हो। [النساء : 115] ، [المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399] (सूरह: अन्निसा: 115), (अलमुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न0 399)

नोट: ﴿इज्मा-ए-उम्मत﴾ को हुज्जत मानना भी क़ुरआन व सहीह अहदीस के हुक्म में दाख़िल है : [النساء : 115] ، [المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399] क़ुरआन व सुन्नत (सहीह अहादीस) और इज्माए उम्मत की मुख़ालफ़त ना आए तो (क़यास या इज्तिहाद) करना जायज़ है : (सूरह: अन्निसा:115), अलमुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न0 399) (अलमुसन्नफ़ लिइब्ने अबी शैबह "किताबुल बुयूअ वल अक्जियह" असर न0 22,990) [المُصنف لابن ابی شیبة "کتابُ البیوع والاقضیة" اَثر نمبر 22,990]

क़ुरआन-ए-हकीम से हिदायत हासिल करने के लिये बुनियादी 3 शराइत हैं : कोशिश करना, बात मुतवज्जह होकर सुनना और अक़्ल इस्तेमाल करना

⑳ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ [العنكبوت : 69] (सुरहतुल अन्कबूत:69)

⓴ जो लोग हमारी राह में (हमें पाने के लिये) कोशिश करेंगे हम ज़रुर ऐसे लोगों को अपनी (तरफ़ हिदायत की) राहें दिखा देंगे, बेशक اللهﷻ नेकोकारों के साथ है।

㉑ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ○ [ص : 29] (सूरह: स़ाद:29)

㉑ (ऐ महबूब ﷺ यह बाबरकत किताब (क़ुरआन) हम ने आपकी तरफ़ इसलिये उतारी है ताकि वह लोग इसकी आयत पर ग़ौर करें, और अक़्ल इस्तिमाल करने वाले नसीहत हासिल करे ।

㉒ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ○ [قٓ : 37] (सूरह: काफ़:37)

㉒ बेशक इस (क़ुरआन) में नसीहत है उसके लिये जो दिल रखता हो (यानी उसकी फ़ितरत मस्ख़ ना हुई हो), या फिर उसके लिये (भी नसीहत है) जो बात ग़ौर से सुने और वह मुतवज्जह भी हो।

㉓ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ۭ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ○ [الانعام : 36] (सुरहतुल अनाम: 36)

㉓ बेशक (क़ुरआन) सिर्फ़ वह क़ुबूल करते हैं जो बात सुन लेते हैं और मुर्दों (कान और अक़्ल इस्तेमाल ना करने वालों) को اللهﷻ ही उठाएगा। फिर उसी की तरफ़ लौटाए जाएँगें।

㉔ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ○ [حٰمٓ السجدة : 26] (सूरह: हा-मीम सज्दा:26)

㉔ और काफ़िर लोग कहते हैं कि इस क़ुरआन को मत सुना करो, और इस (क़ुरआन की दावत) में शोर मचा दिया करो ताकि तुम इस (क़ुरआन की दावत) पे ग़ालिब आ सको।

㉕ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ○ [الملک : 10] (सुरहतुल: मुल्क: 10)

㉕ और (काफ़िर लोग क़यामत के दिन अफ़सोस से) कहेंगे ऐ काश! हम (दुनिया में क़ुरआन की दावत) सुनने वाले या अक़्ल इस्तेमाल करने वाले होते तो दोज़ख़ वालों में से ना होते।

③ क़ुरआन-ए-हकीम को छोड़ कर किसी भी और किताब के ज़रिऐ से दीन-ए-इस्लाम की दावत व तब्लीग़ और जिहादे-अकबर मुमकिन नहीं

㉖ O..........وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ..........

[الانعام : 19]
(सुरहतुल अनाम:19)

㉖ (ऐ महबूब ﷺ आप फ़रमाओ:) और वहीह किया गया है मेरी तरफ़ यह क़ुरआन ताकि मैं इससे तब्लीग़ कर दूँ तुम्हें और जिस तक भी यह पहुँच जाए (वह भी क़ुरआन पर अ़मल और इसी से तब्लीग़ करे)

㉗ O فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ..........

[ق : 45]
(सूरह: काफ़: 45)

㉗ ऐ महबूब ﷺ ! इस क़ुरआन के ज़रीए नसीहत करो उसे जो اللّٰه ﷻ की वईद (धमकी) से डरता है (यानी जो वाक़ई हक़ के हुसूल की ख्वाहिश रखता हो उसे तब्लीग़ नफ़ा देती है)।

㉘ O فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُم بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا

[الفرقان : 52]
(सुरहतुल फ़ुरक़ान:52)

㉘ ऐ महबूब ﷺ इन काफ़िरों की पैरवी ना करना (यानी इन की बातों को नज़र अन्दाज़ करो), और उनसे इस (क़ुरआन) के ज़रीए (नसीहतो-तब्लीग़ करके) बड़ा जिहाद करो।

㉙ O وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

[حٰمٓ السجدة : 33]
(सूरह: हा-मीम सज्दा: 33)

㉙ और उस शख़्स से ज़्यादा किसकी बात अच्छी होगी जो लोगों को (क़ुरआन के ज़रीए) اللّٰه ﷻ की तरफ़ बुलाए और नेक आमाल करे, और कहे कि मैं (भी आम) मुसलमानों में से हूँ।

क़ुरआन-ए-हकीम से दूरी और आख़िरत की नाकामी की असल वजह अपने अपने फ़िर्के के बुज़ुर्गों की अन्धा धुन्ध पैरवी करना है

㉚ O وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ

[لقمان: 21]
(सूरह: लुक़्मान: 21)

㉚ और जब उनसे कहा जाता है कि इत्तिबा करो उसकी जो की اللّٰه ﷻ की तरफ़ से नाज़िल हुआ तो वे कहते हैं कि बल्कि हम तो उसी की इत्तिबा करेंगे जिस पर हम ने अपने आबा-व-अजदाद (यानि बाप दादाओं) को पाया है, भला क्या इनको (और आबा-व-अजदाद को) शैतान दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो तब भी? (ये क़ुरआन व सही अहादीस को छोड़ कर अपने बुर्ज़ुगों की पैरवी ही करते चले जाऐंगे ?)

㉛ O..........اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ

[التوبة : 31]
(सुरहतुल तौबा: 31)

㉛ उन (गुमराही की पैरवी करने वाले) लोगों ने اللّٰه ﷻ को छोड़ कर अपने दर्वेश लोगों और उलेमा को अपना रब बना लिया है। (कि क़ुरआन व सही अहादीस को छोड़ कर अपने बुर्ज़ुगों की मानते हैं)

㉜ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا O يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا O لَّقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي

وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنسَانِ خَذُولًا O وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا O

[الفرقان : 27 تا 30]
(सुरहतुल फ़ुरक़ान: 27 से 30)

㉜ और उस (कयामत के) दिन ज़ालिम शख़्स अपने हाथों को मुँह में चबा-चबा कर (अफ़्सोस करते हुए) कहेगा: ऐ काश! मैंने (दुनिया की ज़िन्दगी में) रसूल ﷺ का रास्ता इख़्तियार किया होता। हाए अफ़्सोस, ऐ काश मैंने फ़लाँ शख़्स को रसूल ﷺ की तालीमात के मुक़ाबले में) दोस्त ना बनाया होता। बेशक उसने मुझे नसीहत (क़ुरआन) से बहका दिया जबकि वह मेरे पास आ चुकी थी, और शैतान तो इन्सान को बे यारो मददगार छोड़ने वाला है। और (क़यामत के दिन) रसूल ﷺ (शिकायत करते हुए ये) कहेंगे: ऐ मेरे रब मेरी उम्मत ने क़ुरआन को छोड़ दिया था।

㉝ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا O وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا O رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ

مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا O

[الاحزاب : 66 تا 68]
(सुरहतुल अहज़ाब: 66 से 68)

㉝ उस दिन उन (ज़ालिमों) के चेहरे आग में उलट पलट किये जाऐंगे। तो कहेंगे ऐ काश! हम ने اللّٰه ﷻ की और रसूल ﷺ की इताअ़त इख़्तियार की होती और अर्ज़ करेंगे: ऐ हमारे रब! हम ने अपने बड़ो और बुज़ुर्गों की इताअ़त की तो उन्होंने हमें राह से बहका दिया, ऐ हमारे रब! उन (बुज़ुर्गों) को दोगुना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत भेज।

क़ुरआन-ए-हकीम की रोशनी में फिर्कावारियत की मज़म्मत, सिराते मुस्तक़ीम की पहचान और नाकाबिले माफ़ी जुर्म की निशानदेही

㉞ O..........وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا

[آل عمران : 103]
(सूरह: आले इमरान:133)

㉞ और (ऐ ईमान वालों) तुम सब मिल कर اللّٰه ﷻ की रस्सी (क़ुरआन) को मज़बूती से थाम लो और आपस में फ़िर्कों में मत तक्सीम हो जाओ। (इस आयते मुबारका की तश्रीह में सही हदीस मुलाहिज़ा फ़रमाऐं): اللّٰه ﷻ की किताब اللّٰه ﷻ की रस्सी है, जिसने इसकी इत्तिबा की वह हिदायत पर है और जिसने इसे छोड़ दिया वह गुमराह हो गया।

[صحیح مسلم "کتاب الفضائل" حدیث نمبر 6228]
(सहीह मुस्लिम "किताबुल फ़ज़ाइल" हदीस न॰ 6228)

㉟ O..........مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِي هَٰذَا..........

[الحج : 78]
(सूरह: हज्ज: 78)

㉟ (पैरवी करो) अपने बाप इब्राहीम عليه السلام के दीन की। इस (क़ुरआन के नाज़िल होने) से पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम (मुसलमान) रख़ा और इस (क़ुरआन) मे भी (तुम्हारा यही नाम है।)

㊱ O إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

[الانعام : 159]
(सुरहतुल अनाम: 159)

㊱ बेशक जिन्होंने दीन में फ़िर्के बनाए और गिरोहों में बंट गए। आप (रसूलुल्लाह ﷺ का उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं उनका मामला اللّٰه ﷻ के सुपुर्द है फिर वह उन्हें उनकी करतूत बता देगा।

㊲ O قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ O قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ O

[الانعام : 161 تا 163]
(सुरहतुल अनाम:161 से 163)

㊲ (ऐ महबूब ﷺ!) आप फ़रमाओ: मुझे तो मेरे रब ने सीधे रास्ते तक पहुँचा दिया है जो दीने मुस्तहकम हैं (बहुत मजबूत और हमेशा कायम रहने वाला) है। मिल्लते इब्राहीम عليه السلام पर जो यकसू थे और मुशरिकों (शिर्क करने वालों) में से ना थे। आप फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना اللّٰه ﷻ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है। उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म हुआ और मैं पहला मुसलमान (ताबे फ़रमान) हूँ।

㊳ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ○ [الانعام : 153]
(सुरहतुल अनाम: 153)

㊳ और यह मेरा सीधा रास्ता है तो इसकी पैरवी करो। और मत पैरवी करो उन रास्तों की जो तुम्हें उस (اللّٰہ ﷻ) की राह से बहका देंगे। इसी की तुम्हें वसिय्यत की जाती है ताकि तुम मुत्तक़ी बन सको।

㊴ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ [الزمر : 65]
(सूरह: ज़ुमर 65)

㊴ और बेशक (ऐ महबूब ﷺ)आप और आप से पहले अंबिया की तरफ़ यही वहय की गई कि अगर तुमने शिर्क किया तो ज़रुर तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाऐंगे और तुम ख़सारा पाने वालों में से हो जाओगे।

㊵ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ○ [النساء : 116]
(सुरहतुल निसा: 116)

㊵ बेशक اللّٰہ ﷻ हरगिज़ शिर्क को माफ़ नहीं करेगा, उसके अलावा जो भी गुनाह हो जिस के लिये चाहेगा माफ़ फ़रमा देगा, और जिसने اللّٰہ ﷻ के साथ शिर्क किया वह गुमराही में दूर जा पड़ा।

㊶ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○ .... [المائدة : 72]
(बेशक मायदा:72)

㊶ बेशक जिस किसी ने भी اللّٰہ ﷻ के साथ शिर्क किया तो बेशक اللّٰہ ﷻ ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना (दोज़ख़ की) आग है और इन ज़ालिमों का कोई मददगार ना होगा।

कुरआन-ए-हकीम की बुनियादी दावत ग़लबा-ए-तौहीद है: इबादत भी सिर्फ़ एक اللّٰہ ﷻ की और ख़ास तौर पर दुआ भी सिर्फ़ एक اللّٰہ ﷻ ही से

㊷ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ○ [الصف : 9]
(सूरह: सफ़ 9)

㊷ वहीह (اللّٰہ ﷻ ही तो) है जिसने अपने रसूल ﷺ को हिदायत (कुरआन) और दीने हक़ (इस्लाम) देकर भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे ख्वा मुशरिकीन इसको बुरा मान जाएँ।

㊸ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ .... ○ [النحل : 36]
(सुरहतुल नहल: 36)

㊸ और बेशक हमने हर उम्मत में (कोई ना कोई) रसूल عليه السلام भेजा कि (यही अहम दावत दे: ऐ लोगों!) اللّٰہ ﷻ की इबादत करो, और तागूत (शैतान और झूठे माबूदों) से बचो।

㊹ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ [الفاتحة : 4]
(सुरहतुल फ़ातिहा: 4)

㊹ (ऐ اللّٰہ ﷻ) हम तेरी ही इबादत करते हैं और (ऐ اللّٰہ ﷻ) तुझ ही से (ग़ैब मे) मदद मांगते हैं (यानी दुआ मांगते हैं)।

㊺ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ○ [النمل : 62]
(सुरहतुल नम्ल: 62)

㊺ कौन क़ुबूल करता है बेक़रार की फ़रियाद को जब वह उसे पुकारे, और दूर करता है तक्लीफ़ को, और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाता है, क्या اللّٰہ ﷻ के साथ और माबूद भी है? तुम लोग बहुत कम ही ग़ौरो-फ़िक्र करते हो!

㊻ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۖ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ○ [البقرة : 186]
(सुरहतुल बक़रह: 186)

㊻ ऐ महबूब ﷺ और जब आप से मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ सवाल करें, (तो आप फ़रमाओः) यक़ीनन मैं बिल्कुल नज़्दीक हूँ, क़ुबूल करता हूँ पुकारने वाले की पुकार (दुआ) को, जब वह मुझे पुकारता है, पस उन्हें भी चाहिये कि मेरा हुक्म माने (यानी इबादत भी सिर्फ़ मेरी करें और दुआ भी सिर्फ़ मुझ से मांगें।) और मुझ पर ईमान लाऐं ताकि वह कामयाबी पा सकें।

㊼ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ○ [المومن : 60]
(सुरहतुल मौमिन: 60)

㊼ और तुम्हारे रब ﷻ ने फ़रमाया :मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करुँगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं।

㊽ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۗ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۗ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ○
قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۗ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ [المائدة : 75 اور 76]

㊽ ईसा बिन मरियम عليه السلام तो नहीं मगर एक रसूल ही बेशक उन से पहले भी बहुत रसूल गुज़रे हैं और उनकी माँ एक सच्ची औरत थीं, वह दोनों (माँ बेटा) खाना खाते थे (इन्सान ही थे) देखो तो हम अपनी आयात उनके लिये कैसे खोल कर बयान करते हैं और फिर उन (शिर्क करने वाले ईसाइयों) की तरफ़ भी देखो कि कैसे उल्टे फिरे जाते हैं।(ऐ महबूब ﷺ)आप फरमाओ: क्या तुम लोग اللّٰہ ﷻ के अलावा उन (माँ बेटा) की इबादत करते हो जो ना तुम्हारे नुक़्सान का इख़्तियार रखते हैं और ना ही नफ़े का (वह मुश्किल कुशा नहीं)। और اللّٰہ ﷻ ही (दुआ) सुनने वाला इल्म रखने वाला है।

㊾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ
رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۗ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ○ [بنی اسرائیل : 56 اور 57]
(सूरह: बनी इस्राईल: 56 और 57)

㊾ (ऐ महबूब ﷺ) आप फ़रमाओ:(ऐ लोगों!) उस (اللّٰہ ﷻ) के अलावा जिन (हस्तियों) के मुताल्लिक तुम्हें बड़ा ज़ुअम है, (दुआ करने पर तुमको बडा घमंड है) ज़रा उनको पुकार कर देख लो, ना तो वह तुम से तक्लीफ़ दूर कर सकते हैं और ना ही तक्लीफ़ बदल देने पर क़ादिर हैं (मुश्किल कुशा नहीं)। जिन (बुर्जुगों) को यह पुकार रहे हैं वे तो ख़ुद अपने रब ﷻ की बारगाह में वसीला (नेक आमाल करने) की जुस्तजू में रहते हैं कि कौन उन में से अपने रब ﷻ के ज़्यादा क़रीब होता है। और उसकी रहमत के उम्मीदवार रहते हैं और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं, बेशक तेरे रब ﷻ का अज़ाब डरने की ही शै है।

आख़री नसीहत

㊿ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۗ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ○ [السجدة : 22]
(सुरहतुल सजदा:22)

㊿ और उस से बढ़ कर ज़ालिम शक्स भला कौन हो सकता है जिसको उसके रब ﷻ की आयतों से नसीहत की जाए फिर भी वह इससे मुँह फेर ले, बेशक हम ऐसे मुजरिमों से तो इन्तिक़ाम लेने वाले हैं।

الداعی الی الخیر: نوجوانان اہلسنت اسلام آباد (پاکستان) e-mail : ahlesunnat_pak @ yahoo.com